International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 4, April 2018
Website-www.aarf.asia,**Email**:editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

जुगनू कुमार
शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
श्री सत्य साँई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, पचामा (सीहोर)

प्रस्तुत शोध पत्र में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन कर उन पर किशोरावस्था समस्या मापनी का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में संवेगात्मक समस्याएँ, छात्रों की तुलना में उच्च पाई गयीं जबकि छात्रों में सामाजिक/व्यावसायिक समस्याएँ, छात्राओं की तुलना में उच्च पाई गयीं।

किशोरावस्था विकास तथा समायोजन का वह समय है जो बचपन तथा प्रौढ़ अवस्था के बीच अंतर–कालीन समय होता है। यह समय बचपन से शुरू होता है और प्रौढ़ अवस्था में लीन हो जाता है। इस काल में बचपन का विकास समाप्त हो जाता है और परिवर्तन की क्रांतिकारी प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इस अवस्था में छात्रों में तात्कालिक तथा दीर्घकालिक दोनों ही प्रभाव देखने को मिलते हैं। इस अवस्था में किशोरों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनका समाधान करने का वह संपूर्ण प्रयास करते हैं परंतु प्रायः उन्हें असफलता ही हाथ लगती है। समस्याग्रस्त होने के कारण उनमें सांवेगिक अस्थिरता, कुंठा, क्रोध, आक्रामकता, तनाव एवं मादक पदार्थो के सेवन जैसे विकार उत्पन्न हो जाते हैं। यदि किशोरों की समस्याओं का उचित समाधान हो जाये तो परिवार, विद्यालय व समाज में उनका समायोजन अच्छी तरह होगा एवं वे योग्य नागरिक बन सकेगें। प्रस्तुत शोधकार्य में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना अत्यंत सामयिक प्रतीत होता है, क्योंकि लिंग का भी समस्याओं के निर्धारण में योगदान होता है। अतः इस हेतु शोधार्थी ने किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की समस्याओं की तुलना करने का प्रयास इस अध्ययन द्वारा किया है।

प्रस्तुत शोध से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **भाटिया (1984)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि भारतीय वातावरण में लड़कियों के लिये घर का वातावरण अधिक तनावपूर्ण

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

तथा दुखदायी था। **सिंह, एस. (1984)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि माता–पिता के व्यवहार में अपने पाल्यों के प्रति स्नेह, सुरक्षा, अस्वीकृती के व्यवहार में लिंग भिन्नता पायी गयी। **पंडित (1985)** ने अपने अध्ययन में पाया कि किशोरों में किशोरियों की तुलना में अधिक संवेगात्मक तथा सामाजिक समायोजन पाया गया। **कश्यप (1989)** ने अपने अध्ययन में पाया कि किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं की समस्या में कोई सार्थक अंतर नहीं था। **राठेर, के.आर. (1990)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि छात्रों में विद्यालयीन, आर्थिक, पुनः निर्माण, पारिवारिक क्षेत्रों में समस्या, छात्राओं की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाई गई। **शर्मा (1999)** ने अपने अध्ययन में पाया कि मध्य एवं उत्तर किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक संवेगात्मक एवं सामाजिक समस्याओं में अंतर नहीं था। **दुबे (2008)** ने अपने अध्ययन में पाया कि किशोरों में व्यक्तिगत विद्यालयी एवं पारिवारिक समस्याएं सामाजिक समस्याओं की तुलना में अधिक थीं। **बाजपेयी, शुक्ला एवं माकवे (2009), वैद्य एवं उपाध्याय (2010)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि लड़के, लड़कियों की अपेक्षा अधिक समायोजित पाए गए। **नासिर, मलिहा (2012)** ने अपने अध्ययन में पाया कि समायोजन में लिंग भिन्नाता नहीं पाई जाती है। **बाजपेयी, अग्रवाल एवं बाकलीवाल (2013)** के अध्ययन से प्राप्त परिणामों के अनुसार किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक/सामाजिक/व्यवसायिक समस्या में सार्थक अंतर पाया गया। छात्रों में संवेगात्मक समस्या छात्राओं से अधिक पाई गई जबकि छात्राओं में सामाजिक व व्यवसायिक समस्या छात्रों से अधिक पाई गई।

उद्देश्य :–

किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपकरण :–

किशोरावस्था समस्या मापनी – आशीष बाजपेयी, हरगोविंद शुक्ला एवं अमित गुप्ता

विधि :–

सर्वप्रथम भोपाल जिले में स्थित दो माध्यमिक विद्यालयों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर इन विद्यालयों की कक्षा नवमीं में अध्ययनरत् 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्राओं) का चयन कर उन पर 'किशोरावस्था समस्या मापनी' का प्रशासन किया गया। संपूर्ण प्रदत्तों को छात्र व छात्राओं में विभाजित कर किशोरावस्था समस्या मापनी के तीनों क्षेत्रों का अलग अलग फलांकन किया गया। प्राप्तांकों

के आधार पर मॉस्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया तथा परिणाम प्राप्त किये गये। प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण :–

तालिका

किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की विभिन्न समस्याओं संबंधी तुलनात्मक परिणाम

किशोरावस्था की समस्याएँ	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
संवेगात्मक	छात्र	50	9.76	2.78	2.34	< 0.05
	छात्राएँ	50	11.12	3.04		
सामाजिक	छात्र	50	7.62	2.81	2.04	< 0.05
	छात्राएँ	50	6.54	2.45		
व्यावसायिक	छात्र	50	6.32	2.02	2.70	< 0.01
	छात्राएँ	50	5.24	1.95		

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.05, 0.01 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान – 1.98, 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणाामों से यह स्पष्ट है कि किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं के लिये प्राप्त क्रातिक अनुपात के मान क्रमशः 2.34, 2.04, 2.70 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05, 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98, 2.63 की अपेक्षा अधिक हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं के मध्य संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में संवेगात्मक समस्याएँ, छात्रों की तुलना में उच्च पाई गयीं जबकि छात्रों में सामाजिक/व्यावसायिक समस्याएँ, छात्राओं की तुलना में उच्च पाई गयीं।

निष्कर्ष :–

किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं के मध्य संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में संवेगात्मक समस्याएँ, छात्रों की तुलना में उच्च पाई गयीं जबकि छात्रों में सामाजिक/व्यावसायिक समस्याएँ, छात्राओं की तुलना में उच्च पाई गयीं।

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

1. गुप्ता, एस. पी. (2005) ''सांख्किीय विधियाँ'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. वालिया, जे.एस. (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें'' पाल पब्लिशर्स, जालंधर।
3. बाजपेयी, आशीष, शुक्ला, हरगोविन्द एवं माकवे, जमना प्रसाद (2009) ''किशोरावस्था के विद्यार्थियों के समयोजन का लिंग के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन'', *रिसर्च हंट, वाल्यूम–IV, अंक–IV, जुलाई–अगस्त (2009), पेज नं. 233–237*
4. बाजपेयी, आशीष; अग्रवाल, रंजना एवं बाकलीवाल, ममता (2013) ''किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन'', *अमिताराधन, वर्ष –1–2, अंक–2–3 (सयुक्तांक), नवम्बर (2013), पेज नं. 125–130*
5. Bhatia, K.T. (1984) "The Emotional, personal and social Problems of Adjustment of Adolescents under Indian Conditions with special reference to values of life", *Ph.D. Edu., Bombay University, In fourth Survey of Research in Education (1983-88), Vol.- I, Pg. No. - 347.*
6. Kashyap, Veena (1989) "Psychological determinants of adolescents Problem", *Ph.D. Edu., Agra Univ., In Fifth Survey of Educational Research (1988-92), Vol. - II, Pg. No. – 894*
7. Pandit, I. (1985) "A Study of the Psychological Needs and Self-Concept of Adolescents and their Bearing on Adjustment", *Ph.D. Edu., Bombay University, In fourth Survey of Research in Education (1983-88), Vol - I, Pg. No. - 410, 411.*
8. Rather, A.R. (1990) "Adjustment among middle school students in relation to socio-economic status and social structure of the school", *Indian Educational Review, Vol 25 (3) : 25-31, in Fifth Servey of Educational Research (1988-1992), Vol. 2, Pg. No. 1020-1021.*
9. Singh,S.(1984) "Relationship of Home Environment, Need for Achievement and Academic Motivation with Academic Achievement", *Ph.D. Psy., Mag. U., Fourth Survey of Edu. Reserch, Vol. - I, Page No. 856-857.*
10. Vaidya, Rani & H. Upadhyay (2010) "Affect of emotional quotient of adjustment of adolescence students", *Research Hunt : Vol-V, Issue - VII, September 2010, Pg. No. 95-99.*